शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम कैसे हों?

विजय कुमार आर्य*

डाइट तथा सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत विभिन्न अध्यापक शिविरों का आयोजन होता रहता है, जिसे मुख्य प्रशिक्षक अथवा संदर्भ व्यक्ति सम्बोधित करते हैं। अधिकांश शिविरों की सफलता संदिग्ध होती है। यहां अधिकतर प्रशिक्षण प्रदाता तथा अदाता दोनों पूर्वाग्रह से ग्रसित हैं कि ये शिविर औचित्यहीन हैं, अध्यापक को प्रशिक्षण की आवश्यकता ही नहीं है, यह ऊपर से थोपा गया कार्यक्रम है, जिसे पूर्ण करने की खानापूर्ति करनी पड़ती है। इन प्रशिक्षणों में वे अध्यापक ज्यादा आकर्षित होते हैं जो शहर आने में सुविधा का अनुभव करते हैं तथा विद्यालय में रहकर पढ़ाना कम पसंद करते हैं। कुछ भी हो कुछ विशेष विधाओं से इनको रोचक, आकर्षक व लक्ष्योन्मुखी बनाया जा सकता है। प्रत्येक विषय अपने आप में महत्वपूर्ण होता है, लेकिन उसकी महत्ता को जागरूक करना पड़ता है। प्रस्तुत आलेख में अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की असफलता के प्रति उत्तरदायी सामान्य कारणों तथा मनोवैज्ञानिक विधाओं की चर्चा की गई है।

1. **उद्देश्य निर्धारण–** प्रशिक्षण का उद्देश्य अध्यापकों की अभिवृति (एटीट्यूड) परिवर्तन करना है न कि सूचनात्मक ज्ञान प्रदान करना। अधिकतर कार्यक्रमों में प्रशिक्षक अध्यापकों को सूचनात्मक सामग्री देने लग जाते हैं, जिससे वे नीरसता अनुभव करते हैं, अतः नींद में ऊंघने लग जाते हैं। पढ़ाई की अंतर्वस्तु की अपेक्षा पढ़ाने की कार्य प्रणाली (मैथड) पर ध्यान देना अधिक आवश्यक है।

2. **मानस उद्वेलन (ब्रेन स्ट्रोमिंग)–** मानस उथल-पुथल किसी महत्वपूर्ण चर्चा के समय होती है, अतः भारी शोर-शराबा होता है, जो उचित भी है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या तथा बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम के अनेक विषय संवेदनशील हैं, जैसे बालकों को अनुत्तीर्ण नहीं करना, दण्ड की मनाही, नृत्य-गायन गतिविधियों का समावेश, कला शिक्षा प्रयोजना (प्रोजेक्ट) इत्यादि। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के

* *अध्यापक,* (व.अ.), रा. मा. वि., आच्छापुर, जिला- चुरू (राजस्थान) 331305

दौरान ऐसे विषयों पर ब्रेन स्ट्रोमिंग करना चाहिए।

3. **चिंतन प्रणाली में संशोधन–** 'कोई व्यक्ति कैसे सोचता है? अत्यंत महत्वपूर्ण है। अर्थात् कूप-मन्डूक की अपेक्षा सागर के जीव की तरह चिंतन करना सिखाना, व्यापक दृष्टि प्रदान करना, प्रशिक्षक के लिये चुनौतीपूर्ण कार्य हैं। विचारों में परिवर्तन हेतु सूक्ष्म कौशल की आवश्यकता है। विवादित विषय को श्यामपट्ट पर लिख देना उचित है और उस बिंदु पर खुली बहस चलने दें, अंत में प्रशिक्षक इसे तार्किक निष्कर्ष की ओर मोड़ दें और वाद-विवाद का निचोड़ प्रस्तुत करें- 'आपका विचार भी उचित है। परंतु इसे इस प्रकार से बेहतर बनाया जा सकता है।' आलोचना-प्रत्यालोचना में स्वस्थ परम्परा डालनी चाहिए, जिस प्रकार खिलाड़ी खेल को खेल की भावना से खेलता है और अपने कमजोर पक्ष को शांति से स्वीकारता है, उसी प्रकार वाद-विवाद में भ्रामक असत्ययुक्त तथ्यों की हार स्वीकार करना सहभागियों की स्वस्थ आदत बन जाए।

4. **परंपराओं का मोह त्याग–** जिन परंपराओं द्वारा शिक्षक पोषित हैं वे उन्हें सार्थक ठहराते हैं तथा नवाचार के प्रति विरोध भावना रखते हैं 'हमारे गुरुजी जो हमें ऐसे पढ़ाते थे तब हम सफल हुए, हम भी यदि उनकी तरह काम करेंगे तो हमारे शिष्य सफल होंगे।' यहां पर बदली हुई परिस्थितियों को नज़र अंदाज़ कर दिया गया है। बड़ी संख्या में शिक्षक प्रतिभागी कहते हैं 'सरकार बार-बार प्रयोग कर रही है, इन नई-नई योजनाओं ने पढ़ाई को ठप्प कर दिया है और हमें खिलौना समझ रखा है।' लेकिन इन्हीं अध्यापकों को समय-समय पर वेतन-संशोधन, वेतन-अभिवृद्धि से कोई एतराज नहीं है। प्रथम तो प्रबोधिक को लोकतंत्र में सरकार का सही अर्थ समझाना चाहिए। सरकार प्रत्येक नागरिक के जन-मानस की भावना समाहित किए हुए होती है। कोई भी योजना लोकतंत्र में थोपी हुई नहीं होती। सामुहिक लोक हित के निर्णय अनेक परीक्षणों के उपरांत तथा आम जनता का अभिमत लेकर लागू किये जाते हैं।

कुछ योजनाएं राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर की होती हैं, जिन्हें लागू करना अनिवार्य होता है, जैसे पल्स-पोलियो, शाला-स्वस्थ कार्यक्रम, सत्त् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी. ई.), पोषाहार, बाल अधिकार, एड्स-बचाव, इत्यादि। मैं एम.ए. मनोविज्ञान के प्रायोगिक कार्य सम्पन्न करने हेतु तमिलनाडु के विद्यालय में गया। वहां उस समय गुरुमित्र तथा गतिविधि आधारित शिक्षण कार्य चल रहा था, अध्यापक बालकों के मध्य दरी-पट्टी पर बैठा था तथा स्वयं गतिविधियों में भाग लेते हुए उनका नेतृत्व तथा पहलकर्ता था, वह योजना लहर नाम से अब हमारे विद्यालयों में भी लागू की गई है।

5. **तर्क प्रतिरोध–** प्रशिक्षण कार्यक्रमों में परंपराओं का महिमा मंडन तथा नवाचार को स्थगित करने के तथ्य संभागियों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रत्येक तंत्र का 'जड़त्व' एक गुण धर्म है, अर्थात् जो चलता आ रहा है वही चलना उचित है। प्रशिक्षक सार्थक परिवर्तनों

के बारे में संभागियों को स्वनिर्णय करने दें, विस्तृत चर्चा के बाद निर्णय निकालें तथा आरम्भ में ही निष्कर्ष प्रस्तुत न करें।

6. **भूमिका निर्वहन–** प्रशिक्षक शिविरार्थी को भूमिका विशेष में बांध देता है। शिविरार्थियों को उनकी योग्यता, रुचि, क्षमतानुसार भूमिकाएं प्रदान करें, क्योंकि भूमिका आबद्ध व्यक्ति जिम्मेदारी से कार्य करता है। उक्त के नेतृत्व में, उक्त व्यक्ति करेंगे।
7. **दलीय परिचर्चा–** दल में विभाजन, दल-नायक चयन, दलगत चर्चा प्रत्येक दल के निष्कर्ष का सामुहिक प्रस्तुतिकरण, महत्वपूर्ण शिविर विधा हैं परंतु उक्त कार्य दरी पर बैठक व्यवस्था करने पर सुगमता से होता है। दलों को प्रथक-प्रथक विषय प्रदान करना उचित है। दल का एक अभिव्यक्ति फलक (चार्ट) हो, जिस पर वे अभिव्यक्ति सारांश रूप में प्रस्तुत कर सकें।
8. **अनुभव आदान-प्रदान प्रक्रिया–** 'देखिए सभी संभागियों का इस क्षेत्र में सेवा अनुभव जोड़ें तो हजारों वर्ष हो जाते हैं, क्यों न इस अनुभव को हम आपस में बाँटें?' यह प्रक्रिया तभी सफलता पूर्वक सम्पन्न होती है, जब झिझक खोलने की गतिविधियां ठीक से चलें। ज्यादातर संभागी हीन भावनाओं से ग्रसित होते हैं तथा अपने कार्य को श्रेष्ठ नहीं समझते। कोई भी ज्ञान परिपूर्ण तथा अंतिम नहीं होता इसमें संशोधन होता रहता है, यह एक प्रवाह है, इसमें हम क्या नया जोड़ सकते हैं? सीखना एक निरंतर क्रिया है, उक्त अवधारणाएं संभागियों में स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए।
9. **सफलता का माप दण्ड–** ज़्यादातर संभागी परम्परागत अवधारणाओं को उचित ठहराते हैं क्योंकि वे कहते हैं कि इस प्रकार से पढ़ाई करवाने पर अमुक ऊँचे पद पर पहुंच गया इत्यादि। शिक्षा में सफलता का मापदण्ड किसी शिष्य के किसी पद पर सफल होना मान लिया जाता है परंतु उसके व्यक्तिगत समायोजन का आकलन नहीं किया जाता। वास्तव में शिक्षा का अर्थ गणना, भाषा-कौशल, नौकर बनना न होकर एक सृजनशील, चिंतनशील, संवेदनशील इंसान बनाना है जिसका कोई प्रत्यक्ष मूल्यांकन नहीं होता है, अत: सह शैक्षिक गतिविधियों को दबा दिया जाता है और परीक्षा में उच्च श्रेणी प्राप्त करना ही सफलता का मापदण्ड समझा जाता है जो उचित नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य तथा सांवेगिक बुद्धि में अभिवृद्धि करना भी है। इन विषयों की उपेक्षा की जाती है। आजकल नये अध्यापकों का चयन भी सूचनात्मक ज्ञानकोष के आधार पर हो रहा है, अध्यापकों में सामाजिक-सरोकरार, नेतृत्व-पहल, सेवा-भावना, सांस्कृतिक-सम्पन्नता, कला- कौशल को नहीं देखा जाता।
10. **विषयान्तर भटकाव–** प्रशिक्षण शिविर कई बार मुख्य विषय से भटक जाता है, कुछ सक्रिय सदस्य पृथक विषयों में समय अपव्यय करते हैं। शिविर लोकतांत्रिक भावना से संचालित हो अर्थात् सभी संभागियों को अभिव्यक्ति के लिये समान समय प्रदान करना, निष्क्रिय को सक्रिय करना, सक्रिय सदस्यों की अनर्गल वार्ता से बचाव भी

प्रशिक्षण का दायित्व बन जाता है। प्रशिक्षक ऐसी गतिविधियों का आयोजन करें कि सभी संभागियों को प्रस्तुतिकरण का अवसर प्राप्त हो, जैसे 'आप जो कह रहे हैं वह उचित है, परंतु अन्य साथियों के विचार भी मानते हैं।'

11. **संवैधानिक मूल भावनाओं का आदर–** धर्म निरपेक्ष, जाति-वंश-क्षेत्र, समाजवाद, मूल कर्त्तव्य, नीति निर्देशक त्तवों के अनुरूप विचारों को प्रशिक्षण से सम्बल प्रदान करना उचित है। हालांकि समूह चर्चा में इतिहास के कुछ संवेदनशील प्रकरण हमारी भावनाओं को आहत कर सकते हैं, जैसे कि विदेशी बर्बर आतंकवादियों द्वारा कत्ले आम तथा बलपूर्वक धर्मांतरण, कुछ वर्ग विशेष में जनसंख्या उफान, आरक्षण इत्यादि। इतिहास के नग्न सत्यों को भी वर्तमान की परिस्थितियों के अनुरूप ढकना पड़ता है। प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का ब्रह्माण्ड विश्लेषण वैज्ञानिक सत्यों से बिलकुल मेल नहीं खाता क्योंकि उस समय ये तथ्य अनुमान आधारित थे न कि प्रयोग आधारित। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना उचित है न कि सीधा किसी तथ्य पर दोषारोपण करना। वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत करने पर काल्पनिक अवधारणाओं का स्वत: विरोध हो जाता है। तर्कशील सोसाइटी जैसे संगठन भी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज का एक नियम दिया था कि असत्य परित्याग तथा सत्य अनुसंधान के लिए सदैव उद्यत रहें।

12. **सनकीपन की समस्या–** विचारों की सृजनशीलता, लोचशीलता, आदान-प्रदान, बहुआयामी चिंतन, नमनीयता, जब समाप्त हो जाती है और एक जैसे विचारों को बार-बार प्रकट किया जाता है तथा प्रत्यक्षीकरण और सामान्यीकरण एक ही अक्ष से किया जाता है तो यह सनकीपन (स्नोबरी) की श्रेणी में आता है। हाथी की वास्तविकता को समझने के लिए ऐसे प्रत्येक कोण से देखा जाए तो वास्तविक हाथी का अवज्ञान होता है। प्रशिक्षक चयन पूर्व उनके मानसिक स्वास्थ्य का परीक्षण उचित है। ज्यादातर प्रशासक पदधारी अपने मस्तिष्क की लोचशीलता खो चुके हैं, उच्चता ग्रंथि (सुपीरियरिटी कॉम्पैक्स) से पीड़ित हैं तथा बड़े दृढ़ (अक्खड़) स्वभावी हैं। अध्यापकों की कार्य कुशलता का अनुमान उनकी श्रेणी से लगाना भ्रामक है, जैसे 'तृतीय श्रेणी शिक्षक तृतीय श्रेणी का कार्य करने वाला ही होगा।' उनमें सुनने का धैर्य कम है तथा अपनी बात बिना तर्क किये थोपने की सनक है।

प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य अभिवृत्ति परिवर्तन है न कि सूचनात्मक ज्ञान देना, परंतु देखा गया है कि प्रशिक्षक अध्यापक कौशल की अपेक्षा अवकाश, आयकर, बीमा तथा अन्य कर्मचारी हितों के प्रकरण उठाकर बड़ी रुचि से चर्चा करते हैं क्योंकि इन विषयों में प्रत्येक कर्मचारी का स्वार्थ निहित है, अत: इसमें समय अपव्यय पर ध्यान नहीं दिया जाता। संभागियों में भी बहुत से कुण्ठाग्रस्त होते हैं तथा अनेक मनोग्रंथियां पाले हुए होते हैं। पढ़े हुए को पढ़ाना कठिन है क्योंकि उनका दिमाग पहले से भरा हुआ है। दृढ़ व्यवहार की अपेक्षा प्रयोगधर्मी बनाना प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। ज्यादातर प्रशिक्षक

गतिविधियों की अपेक्षा व्याख्यान प्रणाली पर आश्रित है जो अध्यापकों के लिए अधिक प्रभावशाली नहीं है।

13. **स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा–** प्रशिक्षक अपनी बात को इतनी सफाई से प्रस्तुत करता है कि स्वतंत्र चिंतन पर प्रशिक्षक के विचार हावी हो जाते हैं। शिक्षक संघों के पदाधिकारी शिक्षक पद हित के नाम पर अवसर मिलने पर इन प्रशिक्षण शिविरों में ब्रेनवॉश करते हैं। ब्रेनवॉश में भावात्मक प्रवाह, चेतना-धारा (स्ट्रीम ऑफ कॉन्शियसनेस्) का उपयोग किया जाता है। ब्रेनवॉश की अपेक्षा स्वतंत्र चिंतन अवसर प्रदान कर विचार अधिग्रहण में उन्मुक्ता का वातावरण उपयुक्त है।

14. **हॉलो प्रभाव–** एक क्षेत्र में सफल व्यक्ति को प्रत्येक क्षेत्र में परिशुद्ध मानना भ्रामक है। प्रशिक्षकों के मुंह से निकली वाणी हमें ब्रह्म सत्य प्रतीत होती है, चाहे वह कितना ही अतार्किक हो। इस सोच को बदलना भी आवश्यक है। लोकतांत्रिक व्यवहार के अनुसार संभागियों के निर्णयन में सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। आबद्ध प्रश्नों की अपेक्षा खुले प्रश्न रखना उचित है। जैसे- 'इस क्षेत्र में और क्या सुधार करना चाहेंगे?' गतिविधियों पर जोर देकर समूह चर्चा द्वारा अर्थापन हो तथा निर्णयन समूह ही करे। पूर्व की गलतियों का पुनरावोलकन किया जाए कि वांछनीय परिणाम प्राप्त नहीं हो रहा है तो क्या कारण हो सकते हैं?

15. **थकान मिटाने वाली गतिविधियां–** प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान अभियान गीत, शायरी, चुटकुले, समूह नृत्य, अभिनय खेल, कविता पाठ, प्रयोग-प्रदर्शन, रोचकता उत्पन्न करने वाली अनेक प्रकार की सामग्री का उपयोग किया जा सकता है। गायनयुक्त नृत्य एक अच्छी विधा है, जिससे शारीरिक व्यायाम भी हो जाता है। सतर्कता बढ़ाने वाली, ध्यान आकृष्ट करने वाली अनेक गतिविधियों का चयन किया जाए, जिससे समूह में निरंतर विचार केंद्रण स्थिर रहे। परिचय गतिविधियों में संभागियों की रुचि पूछना पसंद, नापसंद के बारे में अभिव्यक्ति दिलवाना रोचकता बढ़ा सकता है।

16. **मनोवैज्ञानिक पुरस्कार प्रणाली–** संभागियों के प्रशंसनीय पक्षों, धनात्मक प्रत्युत्तरों को स्थायी प्रभाव बनाने हुतु मनो-पुरस्कार प्रदान किए जाएं। सार्थक उत्तरों पर उत्तरदाता के पक्ष में समूह द्वारा ताली बजवाना अथवा मौखिक प्रशंसा करना उचित होगा। समूह से प्राप्त प्रकरण को ही प्रशिक्षक आगे बढ़ाये तो उचित रहता है। संभागियों को अनुभूत हो कि उक्त निर्णय हम सबने मिलकर प्राप्त किये हैं तथा इन विषयों पर हमारी आम सहमति (सामुहिक निर्णयन) है।

17. **सहायक सामग्री का उपयोग–** श्यामपट्ट पर अंकन में समय व्यय करने की अपेक्षा अक्त विषय-सामग्री पहले से पत्र फलकों (चार्टों) पर तैयार की जा सकती है। ध्वनि, श्रव्य, विडियो आदि का उपयोग भी उचित है। आजकल प्रोजेक्टर, मोबाइल सुलभ हो गया है। संबंधित डाउनलोड सामग्री प्रदर्शित करें तो धनात्मक परणिाम प्राप्त हो सकते हैं।

प्रश्न लिखे गतिविधि कार्ड प्रत्येक संभागी को आबंटित किए जा सकते हैं तथा उनमें निहित निर्देशित गतिविधि अथवा प्रश्नों का प्रत्युत्तर संभागी प्रदान कर सकते हैं। इससे संकोचशील संभागी भी प्रशिक्षण प्रक्रिया में भाग ले सकेगा। प्रोजेक्ट कार्य संग्रह सामग्री भी प्रदर्शित करना सार्थक प्रभाव डालता है।

वर्तमानतः शैक्षिक परिदृश्य में बालचर गतिविधियों (स्काउटिंग), शिक्षाकर्मी परियोजना, लोक जुम्बिस, गुरु मित्र, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम पोरामल, फाउंडेशन, सर्व शिक्षा अभियान इत्यादि योजनाओं ने उत्कृष्ट प्रशिक्षण परम्पराएं डाली हैं। लेकिन प्रशिक्षण विधाओं में निरंतर शोध तथा परिवर्तन की आवश्यकता है।